नजात की राह

हज़रत मूसा मिसर में

najāt kī rāh. hazrat mūsā misr meṅ

The Way of Salvation. Moses in Egypt

by Bakhtullah

[*Zinda Kalam* 7]

(Urdu—Hindi script)

© 2026 Chashma Media.

published and printed by
GWCS, New Delhi

Bible text is from UGV.

illus. R. Gunther
https://freebibleimages.org/illustrations/ls-passover/; https://freebibleimages.org/illustrations/rg-moses-snake/; partially modified by OpenAI

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

ख़ुदा सुनता है	1
नजात का इंतज़ार करो	5
नजात की बुलाहट सुनो	9
नजात की राह क़बूल करो	16
नजात की राह पर चल पड़ो	23
तौरेत, ख़ुरूज 1-12	28

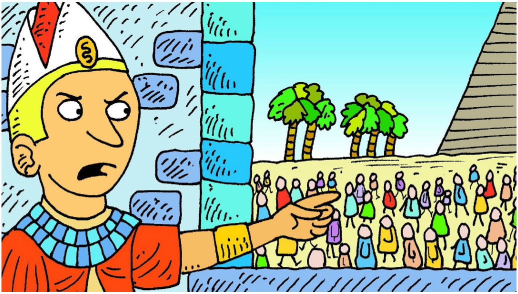

हज़रत इब्राहीम की औलाद काल की वजह से मिसर में टिक गई थी। वहाँ रहते हुए बहुत साल गुज़र गए। उतने में थोड़े लोगों से पूरी क़ौम बन गई। लेकिन जितना वह तरक़्क़ी करती गई उतना ही काले काले बादल छाने लगे। इससे हम पहला सबक़ सीखते हैं,

ख़ुदा सुनता है

जब हम आहें भरते हैं तो ख़ुदा हमारी सुनता है। लिखा है,

> होते होते एक नया बादशाह तख़्तनशीन हुआ जो यूसुफ़ से नावाक़िफ़ था। उसने अपने लोगों से कहा, "इसराईलियों को देखो। वह तादाद और ताक़त में हमसे बढ़ गए हैं। आओ, हम हिकमत से काम लें, वरना वह मज़ीद बढ़ जाएँगे। ऐसा न हो कि वह किसी जंग के मौक़े पर दुश्मन का साथ देकर हमसे लड़ें और मुल्क को छोड़ जाएँ।"

कितनी बार हमें भी यह तजरबा हुआ है कि नया बादशाह कुरसी पर बैठ गया है। हालात एकदम ख़राब।

► **बादशाह किस चीज़ से डरता था?**

इससे कि इसराईली, दुश्मन का साथ देकर हमसे लड़ेंगे। तब लिखा है,

> चुनाँचे मिसरियों ने इसराईलियों पर निगरान मुक़र्रर किए ताकि बेगार में उनसे काम करवाकर उन्हें दबाते रहें। उस वक़्त उन्होंने पितोम और रामसीस के शहर तामीर किए। इन शहरों में फ़िरौन बादशाह के बड़े बड़े गोदाम थे। लेकिन जितना इसराईलियों को दबाया गया उतना ही वह तादाद में बढ़ते और फैलते गए। आख़िरकार मिसरी उनसे दहशत खाने लगे, और वह बड़ी बेरहमी से उनसे काम करवाते रहे। इसराईलियों का गुज़ारा निहायत मुश्किल हो गया। उन्हें गारा तैयार करके ईंटें बनाना और खेतों में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के काम करना पड़े।

► **बादशाह ने क्या हल निकाला?**

उसने बेगार में उनसे काम करवाया।

► **क्या काम?**

शहरों की तामीर जिसमें ईंट बनाना और खेतों में काम करना भी शामिल था।

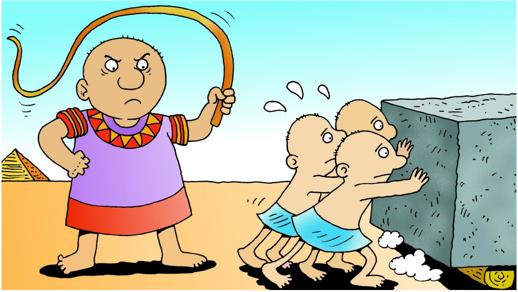

► **क्या बादशाह का यह मनसूबा कामयाब निकला?**

नहीं। जितना इसराईलियों को दबाया गया उतना ही वह बढ़ने और फैलने लगे।

तब बादशाह को एक और तरकीब सूझी। लिखा है,

> इसराईलियों की दो दाइयाँ थीं जिनके नाम सिफ़रा और फ़ुआ थे। मिसर के बादशाह ने उनसे कहा, “जब इबरानी औरतें तुम्हें मदद के लिए बुलाएँ तो ख़बरदार रहो। अगर लड़का पैदा हो तो उसे जान से मार दो, अगर लड़की हो तो उसे जीता छोड़ दो।” लेकिन दाइयाँ अल्लाह का ख़ौफ़ मानती थीं। उन्होंने मिसर के बादशाह का हुक्म न माना बल्कि लड़कों को भी जीने दिया।

► **इसराईलियों को दबाने का नया मनसूबा क्या था?**

बादशाह ने उनकी दाइयों को हुक्म दिया कि तमाम लड़कों को जन्म लेते वक़्त जान से मार दो।

► **क्या यह मनसूबा कामयाब रहा?**

नहीं। दाइयों ने लड़कों को जीने दिया।

तब बादशाह ने मायूस होकर अपने हमवतनों से कहा,

> जब भी इबरानियों के लड़के पैदा हों तो उन्हें दरियाए-नील में फेंक देना। सिर्फ़ लड़कियों को ज़िंदा रहने दो।

► **उनको क्या करना था?**

उनको लड़कों को पैदा होते वक़्त दरिया में फेंकना था।

ग़रज़, बादशाह तीन मनसूबों से इसराईलियों को दबाना चाहता था। फिर भी वह बढ़ते रहे। क्यों? क्योंकि ख़ुदा उनकी सुनता था। वह जल्द ही अपनी क़ौम को छुड़ानेवाला था। इसलिए दूसरा सबक़,

नजात का इंतज़ार करो

कभी कभी नजात एकदम नहीं मिलती। इंतज़ार करना पड़ता है। इसराईलियों के साथ ऐसा ही हुआ। नजात की तैयारियाँ चुपके से होने लगीं। लिखा है,

> उन दिनों में लावी के एक आदमी ने अपने ही क़बीले की एक औरत से शादी की। औरत हामिला हुई और बच्चा पैदा हुआ। माँ ने देखा कि लड़का ख़ूबसूरत है, इसलिए उसने उसे तीन माह तक छुपाए रखा। जब वह उसे और ज़्यादा न छुपा सकी तो उसने आबी नरसल से टोकरी बनाकर उस पर तारकोल चढ़ाया। फिर उसने बच्चे को टोकरी में रखकर टोकरी को दरियाए-नील के किनारे पर उगे हुए सरकंडों में रख दिया। बच्चे की बहन कुछ फ़ासले पर खड़ी देखती रही कि उसका क्या बनेगा।

► **जब बच्चे को छुपाना मुश्किल हो गया तो माँ ने क्या किया?**

उसने उसे एक टोकरी में रखकर दरिया के सरकंडों में छुपा दिया। तब लिखा है,

> उस वक़्त फ़िरौन की बेटी नहाने के लिए दरिया पर आई। उसकी नौकरानियाँ दरिया के किनारे टहलने लगीं। तब उसने सरकंडों में टोकरी देखी और अपनी लौंडी को उसे लाने भेजा। उसे खोला तो छोटा लड़का दिखाई दिया जो

रो रहा था। फ़िरौन की बेटी को उस पर तरस आया। उसने कहा, “यह कोई इबरानी बच्चा है।”

► **क्या बादशाह की बेटी ने बच्चे को पानी में फेंक दिया?**

नहीं। उसे उस पर तरस आया। लिखा है,

अब बच्चे की बहन फ़िरौन की बेटी के पास गई और पूछा, “क्या मैं बच्चे को दूध पिलाने के लिए कोई इबरानी औरत ढूँड लाऊँ?”

फ़िरौन की बेटी ने कहा, “हाँ, जाओ।”

लड़की चली गई और बच्चे की सगी माँ को लेकर वापस आई। फ़िरौन की बेटी ने माँ से कहा, “बच्चे को ले जाओ और उसे मेरे लिए दूध पिलाया करो। मैं तुम्हें इसका मुआवज़ा दूँगी।” चुनाँचे बच्चे की माँ ने उसे दूध पिलाने के लिए ले लिया।

जब बच्चा बड़ा हुआ तो उसकी माँ उसे फ़िरौन की बेटी के पास ले गई, और वह उसका बेटा बन गया। फ़िरौन की

> बेटी ने उसका नाम मूसा यानी ‘निकाला गया’ रखकर कहा, “मैं उसे पानी से निकाल लाई हूँ।”

► **यों ख़ुदा ने बच्चे को एक अजीब तरीक़े से बचाया। कैसे?**

बादशाह की बेटी से। क़ौम के दुश्मन की बेटी से।

► **बच्चे का नाम क्या था?**

मूसा यानी ‘निकाला गया।’ पानी से निकाला गया। ख़ुदा ने उसे पानी से निकालकर छुड़ाया था। बाद में वह उसके ज़रीए अपनी क़ौम को मिसर से निकालकर छुड़ाएगा। लेकिन शुरू में ऐसा नहीं लग रहा था। दरबार में मूसा तो पक्का मिसरी बन गया। लेकिन इसके पीछे ख़ुदा का मनसूबा था। साल गुज़रते गए। फिर लिखा है,

> जब मूसा जवान हुआ तो एक दिन वह घर से निकलकर अपने लोगों के पास गया जो जबरी काम में मसरूफ़ थे।

> मूसा ने देखा कि एक मिसरी मेरे एक इबरानी भाई को मार रहा है। मूसा ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। जब मालूम हुआ कि कोई नहीं देख रहा तो उसने मिसरी को जान से मार दिया और उसे रेत में छुपा दिया।

► **मूसा ने मिसरी को क्यों मार डाला?**

इसलिए कि वह एक इसराईली को मार रहा था।

► **इससे मूसा के बारे में क्या पता चलता है?**

यह कि वह अपने आपको इसराईली महसूस करता था। दूसरे, वह इनसाफ़पसंद था। वह बरदाश्त नहीं कर सकता था कि किसी पर इस तरह का ज़ुल्म किया जाए। यह एक अच्छी ख़ूबी है जो ख़ुदा बाद में इस्तेमाल करेगा।

► **क्या मूसा अब अपने हमवतनों को छुड़ानेवाला था?**

बिलकुल नहीं। वह फ़रार होकर रेगिस्तान में गल्लाबान बन गया। पहले उसे रेवड़ों को सँभालने का काम सीखना था। भेड़-बकरियों की फ़िकर करने से ही उसे इनसान की फ़िकर करने का सही तरीक़ा सीखना था। लगता था कि न मूसा इसराईलियों को बचाएगा, न बचने का कोई और रास्ता निकलेगा। फिर भी ख़ुदा तैयारियाँ कर रहा था। पहले उसने मूसा को बचाया। अब वह रेगिस्तान में मूसा और नजात की राह तैयार करने लगा। हम भी नजात का इंतज़ार करना सीख जाएँ। तीसरा सबक़,

नजात की बुलाहट सुनो

एक दिन ख़ुदा ने मूसा और अपनी क़ौम को नजात पाने के लिए बुलाया। लिखा है,

> एक दिन मूसा रेवड़ को रेगिस्तान की परली जानिब ले गया और चलते चलते अल्लाह के पहाड़ होरिब यानी सीना तक पहुँच गया। वहाँ रब का फ़रिश्ता आग के शोले में उस पर ज़ाहिर हुआ। यह शोला एक झाड़ी में भड़क रहा था। मूसा ने देखा कि झाड़ी जल रही है लेकिन भस्म नहीं हो रही। मूसा ने सोचा, "यह तो अजीब बात है। क्या वजह है कि जलती हुई झाड़ी भस्म नहीं हो रही? मैं ज़रा वहाँ जाकर यह हैरतअंगेज़ मंज़र देखूँ।"

► **मूसा क्यों होरिब पहाड़ के पास गया? क्या वह जानता था कि यह मुक़द्दस जगह है?**

नहीं। अपने रेवड़ को चराते हुए उसने देखा कि झाड़ी जल रही है लेकिन भस्म नहीं हो रही। तब लिखा है,

> जब रब ने देखा कि मूसा झाड़ी को देखने आ रहा है तो उसने उसे झाड़ी में से पुकारा, "मूसा, मूसा!"
> मूसा ने कहा, "जी, मैं हाज़िर हूँ।"
> रब ने कहा, "इससे ज़्यादा क़रीब न आना। अपनी जूतियाँ उतार, क्योंकि तू मुक़द्दस ज़मीन पर खड़ा है। मैं तेरे बाप का ख़ुदा, इब्राहीम का ख़ुदा, इसहाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा हूँ।" यह सुनकर मूसा ने अपना मुँह ढाँक लिया, क्योंकि वह अल्लाह को देखने से डरा।

► **ख़ुदा के पुकारने पर मूसा ने क्या जवाब दिया?**

जी, मैं हाज़िर हूँ। ख़ुदा हम सबको अपने हुज़ूर बुलाता है। क्या आप हाज़िर हुए हैं?

► **फिर ख़ुदा ने क्या फ़रमाया?**

ज़्यादा क़रीब न आना। अपनी जूतियाँ उतार, क्योंकि तू मुक़द्दस ज़मीन पर खड़ा है।

► **ज़मीन क्यों मुक़द्दस है?**

ख़ुदा की क़ुरबत से। वही मुक़द्दस है।

► **तब मूसा ने क्या किया?**

उसने अपना मुँह ढाँक लिया।

► **क्यों?**

इनसान इलाही आग के ज़्यादा क़रीब आ गया तो भस्म हो गया। इसलिए मूसा ने दूर रहकर अपना मुँह ढाँक लिया।

► **फिर ख़ुदा ने अपना तआरुफ़ करवाया। उसने क्या कहा?**

यह कि मैं अजनबी नहीं हूँ। मैं तेरे बापदादा का ख़ुदा हूँ। मैं ही इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब पर ज़ाहिर हुआ हूँ। तब लिखा है,

> रब ने कहा, "मैंने मिसर में अपनी क़ौम की बुरी हालत देखी और ग़ुलामी में उनकी चीख़ें सुनी हैं, और मैं उनके दुखों को ख़ूब जानता हूँ। [...] चुनाँचे अब जा। मैं तुझे फ़िरौन के पास भेजता हूँ, क्योंकि तुझे मेरी क़ौम इसराईल को मिसर से निकालकर लाना है।"

> लेकिन मूसा ने अल्लाह से कहा, “मैं कौन हूँ कि फ़िरौन के पास जाकर इसराईलियों को मिसर से निकाल लाऊँ?”
> अल्लाह ने कहा, “मैं तो तेरे साथ हूँगा। और इसका सबूत कि मैं तुझे भेज रहा हूँ यह होगा कि लोगों के मिसर से निकलने के बाद तुम यहाँ आकर इस पहाड़ पर मेरी इबादत करोगे।”

► **ख़ुदा ने जवाब में मूसा को एक हुक्म दिया। वह क्या?**

इसराईल को मिसर से निकालकर ला।

► **मूसा ने इस पर क्या कहा?**

मैं कौन हूँ कि ऐसा काम करूँ। पहले उसे अपने आप पर इतना एतमाद था कि उसने एक मिसरी को मार दिया। अब वह अपनी कमज़ोरियाँ ख़ूब जानता था।

► **तब ख़ुदा ने क्या जवाब दिया?**

मैं तेरे साथ हूँगा। मतलब है मैंने तुझे इसलिए नहीं चुन लिया कि तू ज़बरदस्त लड़नेवाला है। ताक़त तो मेरी तरफ़ से मिलेगी, क्योंकि मैं ही तेरे साथ हूँ। फिर लिखा है,

> मूसा ने एतराज़ किया, “लेकिन इसराईली न मेरी बात का यक़ीन करेंगे, न मेरी सुनेंगे। वह तो कहेंगे, ‘रब तुम पर ज़ाहिर नहीं हुआ।’”

> जवाब में रब ने मूसा से कहा, “तूने हाथ में क्या पकड़ा हुआ है?”
> मूसा ने कहा, “लाठी।”
> रब ने कहा, “उसे ज़मीन पर डाल दे।”
> मूसा ने ऐसा किया तो लाठी साँप बन गई, और मूसा डरकर भागा।
> रब ने कहा, “अब साँप की दुम को पकड़ ले।”
> मूसा ने ऐसा किया तो साँप फिर लाठी बन गया।
> रब ने कहा, “यह देखकर लोगों को यक़ीन आएगा कि रब जो उनके बापदादा का ख़ुदा, इब्राहीम का ख़ुदा, इसहाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा है तुझ पर ज़ाहिर हुआ है।”

► **मूसा ने क्या एतराज़ पेश किया?**

यह कि इसराईली मेरी बात नहीं मानेंगे।

► **ख़ुदा ने इस पर क्या कहा?**

उसने फ़रमाया कि अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दे। तब वह साँप बन गई। इसके बाद उसने फ़रमाया कि साँप की दुम को पकड़ ले। तब वह दुबारा लाठी बन गया।

► **मूसा को यह क्यों करना है?**

ताकि इसराईलियों को यक़ीन आए कि हमारे बापदादा का ख़ुदा ज़ाहिर हुआ है। फिर ख़ुदा ने फ़रमाया,

“अब अपना हाथ अपने लिबास में डाल दे।”
मूसा ने ऐसा किया। जब उसने अपना हाथ निकाला तो वह बर्फ़ की मानिंद सफ़ेद हो गया था। कोढ़ जैसी बीमारी लग गई थी।
तब रब ने कहा, “अब अपना हाथ दुबारा अपने लिबास में डाल।”
मूसा ने ऐसा किया। जब उसने अपना हाथ दुबारा निकाला तो वह फिर सेहतमंद था।
रब ने कहा, “अगर लोगों को पहला मोजिज़ा देखकर यक़ीन न आए और वह तेरी न सुनें तो शायद उन्हें दूसरा मोजिज़ा देखकर यक़ीन आए। अगर उन्हें फिर भी यक़ीन न आए और वह तेरी न सुनें तो दरियाए-नील से कुछ पानी निकालकर उसे ख़ुश्क ज़मीन पर उंडेल दे। यह पानी ज़मीन पर गिरते ही ख़ून बन जाएगा।”

► **अगर इसराईली न मानें तो मूसा को दो और काम करने हैं। वह क्या?**

पहले, वह अपना हाथ अपने लिबास में डाल दे तो उसे कोढ़ जैसी बीमारी लग जाएगी। उसे दुबारा डालने से वह फिर सेहतमंद हो जाएगा। दूसरे, वह दरिया का पानी ज़मीन पर उंडेल दे तो वह ख़ून बन जाएगा। फिर भी मूसा मुतमइन न हुआ। लिखा है,

> लेकिन मूसा ने कहा, "मेरे आक़ा, मैं माज़रत चाहता हूँ, मैं अच्छी तरह बात नहीं कर सकता बल्कि मैं कभी भी यह लियाक़त नहीं रखता था। इस वक़्त भी जब मैं तुझसे बात कर रहा हूँ मेरी यही हालत है। मैं रुक रुककर बोलता हूँ।"
> रब ने कहा, "किसने इनसान का मुँह बनाया? [...] क्या मैं जो रब हूँ यह सब कुछ नहीं करता? अब जा! तेरे बोलते वक़्त मैं ख़ुद तेरे साथ हूँगा और तुझे वह कुछ सिखाऊँगा जो तुझे कहना है।"

► **अब मूसा ने क्या एतराज़ पेश किया?**

यह कि वह अच्छी तरह से बोलने नहीं पाता।

► **ख़ुदा ने क्या जवाब दिया?**

मैं ही तुझे बोलने की लियाक़त दूँगा। फिर भी मूसा ने न माना। लिखा है,

> लेकिन मूसा ने इल्तिजा की, "मेरे आक़ा, मेहरबानी करके किसी और को भेज दे।"
> तब रब मूसा से सख़्त ख़फ़ा हुआ। उसने कहा, "क्या तेरा लावी भाई हारून ऐसे काम के लिए हाज़िर नहीं है? मैं जानता हूँ कि वह अच्छी तरह बोल सकता है। देख, वह तुझसे मिलने के लिए निकल चुका है। [...] हारून तेरी जगह क़ौम से बात करेगा जबकि तू मेरी तरह उसे वह कुछ बताएगा जो उसे कहना है।"

► **क्या ख़ुदा ख़ुश था जब मूसा ने कहा कि किसी और को भेज दे?**
नहीं। वह ख़फ़ा हुआ। फिर भी उसने नरम जवाब दिया। फ़रमाया कि तेरा भाई हारून तेरी जगह क़ौम से बात करेगा। और ऐसा ही हुआ। मूसा की हारून से मुलाक़ात हुई, और उसने उसे सब कुछ सुनाया। यों मूसा और हारून को नजात की राह पर बुलाया गया। अब दूसरों को बुलाना था। इसलिए चौथा सबक़,

नजात की राह क़बूल करो

ख़ुदा की बुलाहट सुनकर सब नजात की राह क़बूल नहीं करते। कुछ इनकार करते हैं। लिखा है,

> फिर दोनों मिलकर मिसर गए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने इसराईल के तमाम बुज़ुर्गों को जमा किया। हारून ने उन्हें वह तमाम बातें सुनाईं जो रब ने मूसा को बताई

> थीं। उसने मज़कूरा मोजिज़े भी लोगों के सामने दिखाए। फिर उन्हें यक़ीन आया। और जब उन्होंने सुना कि रब को तुम्हारा ख़याल है और वह तुम्हारी मुसीबत से आगाह है तो उन्होंने रब को सिजदा किया।

► क्या बुज़ुर्ग मूसा की बातों से मुतअस्सिर हुए?

हाँ। जवाब में उन्होंने ख़ुदा को सिजदा किया। तब लिखा है,

> फिर मूसा और हारून फ़िरौन के पास गए। उन्होंने कहा, "रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, 'मेरी क़ौम को रेगिस्तान में जाने दे ताकि वह मेरे लिए ईद मनाएँ।'" फ़िरौन ने जवाब दिया, "यह रब कौन है? मैं क्यों उसका हुक्म मानकर इसराईलियों को जाने दूँ? न मैं रब को जानता हूँ, न इसराईलियों को जाने दूँगा।"

► क्या बादशाह मान गया?

नहीं। उसने ग़ुरूर से पूछा कि यह रब कौन है। आख़िरकार वह अपने आपको देवता समझता था। तब लिखा है,

> उसी दिन फ़िरौन ने मिसरी निगरानों और उनके तहत के इसराईली निगरानों को हुक्म दिया, "अब से इसराईलियों को ईंटें बनाने के लिए भूसा मत देना, बल्कि वह ख़ुद जाकर भूसा जमा करें। तो भी वह उतनी ही ईंटें बनाएँ जितनी पहले बनाते थे।"

► **अब से इसराईलियों को क्या करना था?**

अब से उन्हें ईंटें बनाने के लिए ख़ुद भूसा इकट्ठा करना था। लेकिन ख़ुदा पहले से जानता था कि बादशाह इनकार करेगा। वह जानता था कि मिसर को शिकस्त देने से ही इसराईली नजात की राह के लिए तैयार हो जाएँगे।

तब मोजिज़ों का सिलसिला शुरू हुआ। मूसा ने बादशाह के सामने अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दी तो वह साँप बन गई। जादूगर भी यह काम कर पाए, लेकिन मूसा के साँप ने उनके साँपों को निगल लिया। फिर भी बादशाह ने न माना।

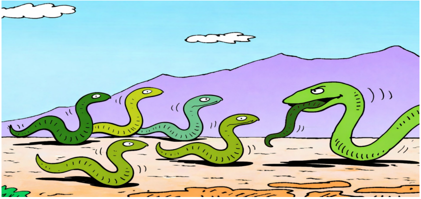

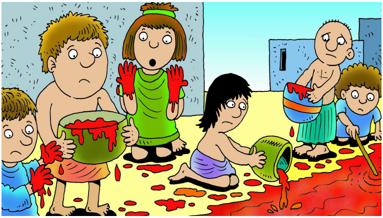

तब दरिया का पानी ख़ून में बदल गया।

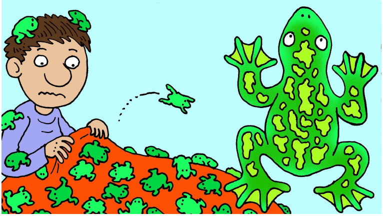

मुल्क मेंढकों से भर गया।

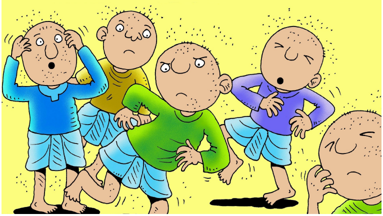

मुल्क में बेशुमार जुएँ फैल गईं।

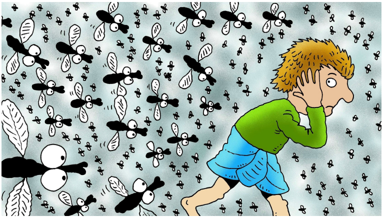

काटनेवाली मक्खियों ने मुल्क पर हमला किया।

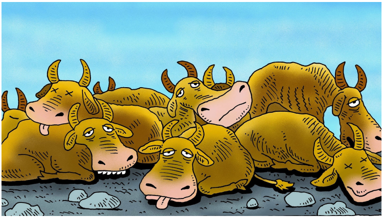

मिसरी मवेशियों में भयानक वबा फैल गई।

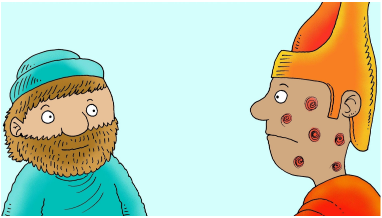

मिसरियों और उनके जानवरों पर फोड़े-फुंसियाँ निकल आईं।

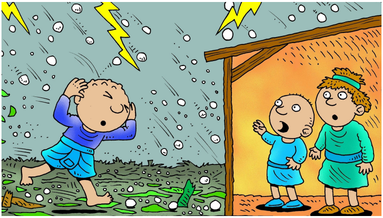

मिसरियों को ओलों से सख़्त नुक़सान हुआ।

बची हुई हरियाली टिड्डियों से ख़त्म हो गई।

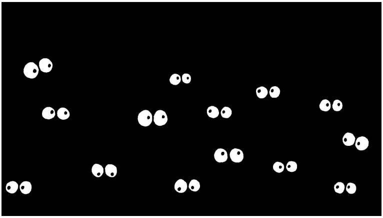

तीन दिन तक गुप अंधेरा छाया रहा।

► **यह आफ़तें क्यों पड़ीं?**

इसलिए कि बादशाह ने नजात की राह का इनकार किया। हर आफ़त के पड़ने पर उसने वादा तो किया कि मैं तुम्हें जाने दूँगा। लेकिन हालात के ठीक होने पर उसने इनकार किया। फिर आख़िरी आफ़त आई। लिखा है,

> मूसा ने कहा, "रब फ़रमाता है, 'आज आधी रात के वक़्त मैं मिसर में से गुज़रूँगा। तब बादशाह के पहलौठे से लेकर चक्की पीसनेवाली नौकरानी के पहलौठे तक मिसरियों का हर पहलौठा मर जाएगा। चौपायों के पहलौठे भी मर जाएँगे। मिसर की सरज़मीन पर ऐसा रोना-पीटना होगा कि न माज़ी में कभी हुआ, न मुस्तक़बिल में कभी होगा। लेकिन इसराईली और उनके जानवर बचे रहेंगे। कुत्ता भी उन पर नहीं भौंकेगा। इस तरह तुम जान लोगे कि रब इसराईलियों की निसबत मिसरियों से फ़रक़ सुलूक करता है।'"

► **इस आफ़त में क्या होगा?**

हर इनसान और जानवर का पहलौठा मर जाएगा। सिर्फ़ इसराईलियों के पहलौठे बच जाएँगे।

हम सीख चुके हैं कि ख़ुदा ने अपनी क़ौम की चीख़ें सुनीं। नजात एकदम न आई, उसका इंतज़ार करना पड़ा। लेकिन तैयारियाँ शुरू हुईं। मूसा को बचाया गया जिसने मिसरी शहज़ादे की तरबियत भी पाई और

गल्लाबान की भी। मुक़र्ररा वक़्त पर ख़ुदा ने उसे रेगिस्तान में बुलाया। उस वक़्त मूसा ने ख़ुदा का पाक किरदार जान लिया। यह भी कि अपनी कमज़ोरियों पर ध्यान मत दो, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँगा। मैं तुझसे मोजिज़े करवाऊँगा। जब मूसा ने कहा कि मैं अच्छी तरह बात नहीं कर सकता तो ख़ुदा ने उसे एक मददगार भी दिया।

अब इसराईलियों की बुलाहट हुई। उन्हें भी सीखना था कि ख़ुदा ही हमें नजात देगा। पहले यह इतनी यक़ीनी बात नहीं थी। क्या वह यह बुलाहट क़बूल करेंगे? क्या वह मान जाएँगे कि ख़ुदा मूसा के ज़रीए हमें मिसर से छुड़ाएगा? इसलिए पाँचवाँ सबक़,

नजात की राह पर चल पड़ो

जब ख़ुदा हमें बुलाता है तो इसे क़बूल करना सिर्फ़ पहला क़दम है। ज़रूरी है कि हम आगे बढ़कर नजात की राह पर चल पड़ें।

► **इसराईलियों को बचने के लिए एक काम करना था। वह क्या?**
लिखा है,

> फिर मूसा ने तमाम इसराईली बुज़ुर्गों को बुलाकर उनसे कहा, “जाओ, अपने ख़ानदानों के लिए भेड़ या बकरी के बच्चे चुनकर उन्हें फ़सह की ईद के लिए ज़बह करो। ज़ूफ़े का गुच्छा लेकर उसे ख़ून से भरे हुए बासन में डुबो देना। फिर उसे लेकर ख़ून को चौखट के ऊपरवाले हिस्से और दाएँ-बाएँ के बाज़ुओं पर लगा देना। सुबह

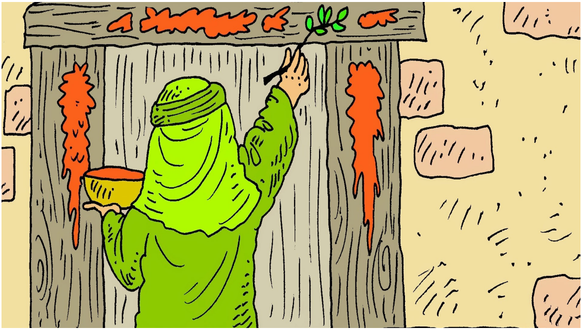

> तक कोई अपने घर से न निकले। जब रब मिसरियों को मार डालने के लिए मुल्क में से गुज़रेगा तो वह चौखट के ऊपरवाले हिस्से और दाएँ-बाएँ के बाज़ुओं पर लगा हुआ ख़ून देखकर उन घरों को छोड़ देगा। वह हलाक करनेवाले फ़रिश्ते को इजाज़त नहीं देगा कि वह तुम्हारे घरों में जाकर तुम्हें हलाक करे।

► **बचने के लिए इसराईलियों को क्या करना था?**

भेड़ या बकरी का बच्चा ज़बह करके उसका ख़ून घर के दरवाज़े की चौखट पर लगाना था।

► **हलाक करनेवाला फ़रिश्ता जब ख़ून देखेगा तो क्या करेगा?**

वह ऐसे घरों को छोड़ देगा। और ऐसा ही हुआ। लिखा है,

> आधी रात को रब ने बादशाह के पहलौठे से लेकर जेल के क़ैदी के पहलौठे तक मिसरियों के तमाम पहलौठों को जान से मार दिया। चौपायों के पहलौठे भी मर गए। उस रात मिसर के हर घर में कोई न कोई मर गया। फ़िरौन, उसके ओहदेदार और मिसर के तमाम लोग जाग उठे और ज़ोर ज़ोर से रोने और चीख़ने लगे।

► **आधी रात क्या हुआ?**

मिसरियों के पहलौठे मर गए जबकि इसराईलियों के पहलौठे बचे रहे।

सदियों बाद एक और लेला क़ुरबान हुआ—ईसा मसीह। उसका ख़ून भी हलाकत से नजात देता है। इसलिए यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने पुकारा,

> देखो, यह अल्लाह का लेला है जो दुनिया का गुनाह उठा ले जाता है। (इंजील, यूहन्ना 1:29)

यूहन्ना ने पहचान लिया कि जिस तरह इसराईली मिसर से निकलते वक़्त लेला की क़ुरबानी से बच गए उसी तरह ईसा मसीह की क़ुरबानी अबदी मौत से बचाती है। फिर लिखा है,

> अभी रात थी कि फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलाकर कहा, "अब तुम और बाक़ी इसराईली मेरी क़ौम में से निकल जाओ। अपनी दरख़ास्त के मुताबिक़ रब की इबादत करो। जिस तरह तुम चाहते हो अपनी भेड़-बकरियों को भी अपने साथ ले जाओ। और मुझे भी बरकत देना।"

► **क्या बादशाह अब इसराईलियों को जाने के लिए तैयार था?**

जी हाँ। अब उसने उन्हें जाने के लिए मजबूर किया। इस पर इसराईली मिसर से निकले।

► **नजात के इस सिलसिले से हम अपने लिए क्या सीख सकते हैं?**

ख़ुदा हमारी सुनता है। वह हमारी चीख़ें अनसुनी नहीं करता।

नजात का इंतज़ार करो। हो सकता है कि वक़्त लगे। फिर भी चुपके से तैयारियाँ चल रही हैं।

नजात की बुलाहट सुनो। मूसा ने यह बुलाहट सुन ली। उस वक़्त उसने सीख लिया कि ख़ुदा सरासर पाक है। जब वही हमारे साथ है तब हम कामयाब हैं। अपने आप पर भरोसा करना बेफ़ायदा है।

नजात की राह क़बूल करो। इसराईली क़ौम को भी यह बुलाहट सुनना था। उन्हें भी जान लेना था कि ख़ुदा क़ुद्दूस और पाक है। कि नजात उस वक़्त होता है जब वह हमारे साथ होता है। लेकिन यह जानना काफ़ी नहीं है। नजात की यह राह क़बूल भी करना है। मिसरी बादशाह इनकार करने से हलाकत की राह पर आ गया।

नजात की राह पर चल पड़ो। यह राह क़बूल करना सिर्फ़ पहला क़दम है। ज़रूरी है कि हम आगे बढ़कर नजात की राह पर चल पड़ें। मौत से बचने के लिए इसराईलियों ने एक लेला क़ुरबान किया। हमारे लिए भी मौत से बचने का रास्ता है—ईसा मसीह। उसी का ख़ून हमें अबदी मौत से बचा सकता है।

तौरेत, ख़ुरूज 1–12

इसराईलियों को दबाया जाता है

होते होते एक नया बादशाह तख़्तनशीन हुआ जो यूसुफ़ से नावाक़िफ़ था। उसने अपने लोगों से कहा, “इसराईलियों को देखो। वह तादाद और ताक़त में हमसे बढ़ गए हैं। आओ, हम हिकमत से काम लें, वरना वह मज़ीद बढ़ जाएँगे। ऐसा न हो कि वह किसी जंग के मौक़े पर दुश्मन का साथ देकर हमसे लड़ें और मुल्क को छोड़ जाएँ।”

चुनाँचे मिसरियों ने इसराईलियों पर निगरान मुक़र्रर किए ताकि बेगार में उनसे काम करवाकर उन्हें दबाते रहें। उस वक़्त उन्होंने पितोम और रामसीस के शहर तामीर किए। इन शहरों में फ़िरौन बादशाह के बड़े बड़े गोदाम थे। लेकिन जितना इसराईलियों को दबाया गया उतना ही वह तादाद में बढ़ते और फैलते गए। आख़िरकार मिसरी उनसे दहशत खाने लगे, और वह बड़ी बेरहमी से उनसे काम करवाते रहे। इसराईलियों का गुज़ारा निहायत मुश्किल हो गया। उन्हें गारा तैयार करके ईंटें बनाना और खेतों में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के काम करना पड़े। इसमें मिसरी उनसे बड़ी बेरहमी से पेश आते रहे।

दाइयाँ अल्लाह की राह पर चलती हैं

इसराईलियों की दो दाइयाँ थीं जिनके नाम सिफ़रा और फ़ुआ थे। मिसर के बादशाह ने उनसे कहा, “जब इबरानी औरतें तुम्हें मदद के लिए बुलाएँ तो ख़बरदार रहो। अगर लड़का पैदा हो तो उसे जान से मार दो, अगर लड़की हो तो उसे जीता छोड़ दो।” लेकिन दाइयाँ अल्लाह का ख़ौफ़ मानती थीं। उन्होंने मिसर के बादशाह का हुक्म न माना बल्कि लड़कों को भी जीने दिया। [...]

आख़िरकार बादशाह ने अपने तमाम हमवतनों से बात की, “जब भी इबरानियों के लड़के पैदा हों तो उन्हें दरियाए-नील में फेंक देना। सिर्फ़ लड़कियों को ज़िंदा रहने दो।”

मूसा की पैदाइश और बचाव

उन दिनों में लावी के एक आदमी ने अपने ही क़बीले की एक औरत से शादी की। औरत हामिला हुई और बच्चा पैदा हुआ। माँ ने देखा कि लड़का ख़ूबसूरत है, इसलिए उसने उसे तीन माह तक छुपाए रखा। जब वह उसे और ज़्यादा न छुपा सकी तो उसने आबी नरसल से टोकरी बनाकर उस पर तारकोल चढ़ाया। फिर उसने बच्चे को टोकरी में रखकर टोकरी को दरियाए-नील के किनारे पर उगे हुए सरकंडों में रख दिया। बच्चे की बहन कुछ फ़ासले पर खड़ी देखती रही कि उसका क्या बनेगा।

उस वक़्त फ़िरौन की बेटी नहाने के लिए दरिया पर आई। उसकी नौकरानियाँ दरिया के किनारे टहलने लगीं। तब उसने सरकंडों में टोकरी देखी और अपनी लौंडी को उसे लाने भेजा। उसे खोला तो छोटा लड़का दिखाई दिया जो रो रहा था। फ़िरौन की बेटी को उस पर तरस आया। उसने कहा, "यह कोई इबरानी बच्चा है।"

अब बच्चे की बहन फ़िरौन की बेटी के पास गई और पूछा, "क्या मैं बच्चे को दूध पिलाने के लिए कोई इबरानी औरत ढूँड लाऊँ?"

फ़िरौन की बेटी ने कहा, "हाँ, जाओ।"

लड़की चली गई और बच्चे की सगी माँ को लेकर वापस आई। फ़िरौन की बेटी ने माँ से कहा, "बच्चे को ले जाओ और उसे मेरे लिए दूध पिलाया करो। मैं तुम्हें इसका मुआवज़ा दूँगी।" चुनाँचे बच्चे की माँ ने उसे दूध पिलाने के लिए ले लिया।

जब बच्चा बड़ा हुआ तो उसकी माँ उसे फ़िरौन की बेटी के पास ले गई, और वह उसका बेटा बन गया। फ़िरौन की बेटी ने उसका नाम मूसा यानी 'निकाला गया' रखकर कहा, "मैं उसे पानी से निकाल लाई हूँ।"

मूसा फ़रार होता है

जब मूसा जवान हुआ तो एक दिन वह घर से निकलकर अपने लोगों के पास गया जो जबरी काम में मसरूफ़ थे। मूसा ने देखा कि एक मिसरी मेरे एक इबरानी भाई को मार रहा है। मूसा ने चारों

तरफ़ नज़र दौड़ाई। जब मालूम हुआ कि कोई नहीं देख रहा तो उसने मिसरी को जान से मार दिया और उसे रेत में छुपा दिया। [...] बादशाह को भी पता लगा तो उसने मूसा को मरवाने की कोशिश की। लेकिन मूसा मिदियान के मुल्क को भाग गया।

जलती हुई झाड़ी

एक दिन मूसा रेवड़ को रेगिस्तान की परली जानिब ले गया और चलते चलते अल्लाह के पहाड़ होरिब यानी सीना तक पहुँच गया। वहाँ रब का फ़रिश्ता आग के शोले में उस पर ज़ाहिर हुआ। यह शोला एक झाड़ी में भड़क रहा था। मूसा ने देखा कि झाड़ी जल रही है लेकिन भस्म नहीं हो रही। मूसा ने सोचा, “यह तो अजीब बात है। क्या वजह है कि जलती हुई झाड़ी भस्म नहीं हो रही? मैं ज़रा वहाँ जाकर यह हैरतअंगेज़ मंज़र देखूँ।”

जब रब ने देखा कि मूसा झाड़ी को देखने आ रहा है तो उसने उसे झाड़ी में से पुकारा, “मूसा, मूसा!”

मूसा ने कहा, “जी, मैं हाज़िर हूँ।”

रब ने कहा, “इससे ज़्यादा क़रीब न आना। अपनी जूतियाँ उतार, क्योंकि तू मुक़द्दस ज़मीन पर खड़ा है। मैं तेरे बाप का ख़ुदा, इब्राहीम का ख़ुदा, इसहाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा हूँ।” यह सुनकर मूसा ने अपना मुँह ढाँक लिया, क्योंकि वह अल्लाह को देखने से डरा।

रब ने कहा, “मैंने मिसर में अपनी क़ौम की बुरी हालत देखी और ग़ुलामी में उनकी चीख़ें सुनी हैं, और मैं उनके दुखों को ख़ूब जानता हूँ। [...] चुनाँचे अब जा। मैं तुझे फ़िरौन के पास भेजता हूँ, क्योंकि तुझे मेरी क़ौम इसराईल को मिसर से निकालकर लाना है।”

लेकिन मूसा ने अल्लाह से कहा, “मैं कौन हूँ कि फ़िरौन के पास जाकर इसराईलियों को मिसर से निकाल लाऊँ?”

अल्लाह ने कहा, “मैं तो तेरे साथ हूँगा। और इसका सबूत कि मैं तुझे भेज रहा हूँ यह होगा कि लोगों के मिसर से निकलने के बाद तुम यहाँ आकर इस पहाड़ पर मेरी इबादत करोगे।”

इसराईलियों को यक़ीन दिलाने के निशान

मूसा ने एतराज़ किया, “लेकिन इसराईली न मेरी बात का यक़ीन करेंगे, न मेरी सुनेंगे। वह तो कहेंगे, ‘रब तुम पर ज़ाहिर नहीं हुआ।’”

जवाब में रब ने मूसा से कहा, “तूने हाथ में क्या पकड़ा हुआ है?”

मूसा ने कहा, “लाठी।”

रब ने कहा, “उसे ज़मीन पर डाल दे।”

मूसा ने ऐसा किया तो लाठी साँप बन गई, और मूसा डरकर भागा।

रब ने कहा, “अब साँप की दुम को पकड़ ले।”

मूसा ने ऐसा किया तो साँप फिर लाठी बन गया।

रब ने कहा, “यह देखकर लोगों को यक़ीन आएगा कि रब जो उनके बापदादा का ख़ुदा, इब्राहीम का ख़ुदा, इसहाक़ का ख़ुदा

और याक़ूब का ख़ुदा है तुझ पर ज़ाहिर हुआ है। अब अपना हाथ अपने लिबास में डाल दे।”

मूसा ने ऐसा किया। जब उसने अपना हाथ निकाला तो वह बर्फ़ की मानिंद सफ़ेद हो गया था। कोढ़ जैसी बीमारी लग गई थी।

तब रब ने कहा, “अब अपना हाथ दुबारा अपने लिबास में डाल।”

मूसा ने ऐसा किया। जब उसने अपना हाथ दुबारा निकाला तो वह फिर सेहतमंद था।

रब ने कहा, “अगर लोगों को पहला मोजिज़ा देखकर यक़ीन न आए और वह तेरी न सुनें तो शायद उन्हें दूसरा मोजिज़ा देखकर यक़ीन आए। अगर उन्हें फिर भी यक़ीन न आए और वह तेरी न सुनें तो दरियाए-नील से कुछ पानी निकालकर उसे ख़ुश्क ज़मीन पर उंडेल दे। यह पानी ज़मीन पर गिरते ही ख़ून बन जाएगा।”

बोलते वक़्त ख़ुदा की मदद

लेकिन मूसा ने कहा, “मेरे आक़ा, मैं माज़रत चाहता हूँ, मैं अच्छी तरह बात नहीं कर सकता बल्कि मैं कभी भी यह लियाक़त नहीं रखता था। इस वक़्त भी जब मैं तुझसे बात कर रहा हूँ मेरी यही हालत है। मैं रुक रुककर बोलता हूँ।”

रब ने कहा, “किसने इनसान का मुँह बनाया? [...] क्या मैं जो रब हूँ यह सब कुछ नहीं करता? अब जा! तेरे बोलते वक़्त मैं ख़ुद तेरे साथ हूँगा और तुझे वह कुछ सिखाऊँगा जो तुझे कहना है।”

हारून की मदद

लेकिन मूसा ने इल्तिजा की, “मेरे आक़ा, मेहरबानी करके किसी और को भेज दे।”

तब रब मूसा से सख़्त ख़फ़ा हुआ। उसने कहा, “क्या तेरा लावी भाई हारून ऐसे काम के लिए हाज़िर नहीं है? मैं जानता हूँ कि वह अच्छी तरह बोल सकता है। देख, वह तुझसे मिलने के लिए निकल चुका है। [...] हारून तेरी जगह क़ौम से बात करेगा जबकि तू मेरी तरह उसे वह कुछ बताएगा जो उसे कहना है।” [...]

मूसा मिसर को लौट जाता है

रब ने हारून से भी बात की, “रेगिस्तान में मूसा से मिलने जा।” हारून चल पड़ा और अल्लाह के पहाड़ के पास मूसा से मिला। उसने उसे बोसा दिया। मूसा ने हारून को सब कुछ सुना दिया जो रब ने उसे कहने के लिए भेजा था। उसने उसे उन मोजिज़ों के बारे में भी बताया जो उसे दिखाने थे।

फिर दोनों मिलकर मिसर गए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने इसराईल के तमाम बुज़ुर्गों को जमा किया। हारून ने उन्हें वह तमाम बातें सुनाईं जो रब ने मूसा को बताई थीं। उसने मज़कूरा मोजिज़े भी लोगों के सामने दिखाए। फिर उन्हें यक़ीन आया। और जब उन्होंने सुना कि रब को तुम्हारा ख़याल है और वह तुम्हारी मुसीबत से आगाह है तो उन्होंने रब को सिजदा किया।

मूसा और हारून फ़िरौन के दरबार में

फिर मूसा और हारून फ़िरौन के पास गए। उन्होंने कहा, “रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मेरी क़ौम को रेगिस्तान में जाने दे ताकि वह मेरे लिए ईद मनाएँ।’”

फ़िरौन ने जवाब दिया, “यह रब कौन है? मैं क्यों उसका हुक्म मानकर इसराईलियों को जाने दूँ? न मैं रब को जानता हूँ, न इसराईलियों को जाने दूँगा।” [...]

जवाब में फ़िरौन का सख़्त दबाव

उसी दिन फ़िरौन ने मिसरी निगरानों और उनके तहत के इसराईली निगरानों को हुक्म दिया, “अब से इसराईलियों को ईंटें बनाने के लिए भूसा मत देना, बल्कि वह ख़ुद जाकर भूसा जमा करें। तो भी वह उतनी ही ईंटें बनाएँ जितनी पहले बनाते थे।” [...]

मूसा की लाठी साँप बन जाती है

[तब] हारून ने अपनी लाठी फ़िरौन और उसके ओहदेदारों के सामने डाल दी तो वह साँप बन गई। यह देखकर फ़िरौन ने अपने आलिमों और जादूगरों को बुलाया। जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया। हर एक ने अपनी लाठी ज़मीन पर फेंकी तो वह साँप बन गई। लेकिन हारून की लाठी ने उनकी लाठियों को निगल लिया।

ताहम फ़िरौन इससे मुतअस्सिर न हुआ। उसने मूसा और हारून की बात सुनने से इनकार किया। वैसा ही हुआ जैसा रब ने कहा था। [...]

पानी ख़ून में बदल जाता है

[तब] मूसा और हारून ने फ़िरौन और उसके ओहदेदारों के सामने अपनी लाठी उठाकर दरियाए-नील के पानी पर मारी। इस पर दरिया का सारा पानी ख़ून में बदल गया। दरिया की मछलियाँ मर गईं, और उससे इतनी बदबू उठने लगी कि मिसरी उसका पानी न पी सके। मिसर में चारों तरफ़ ख़ून ही ख़ून था। लेकिन जादूगरों ने भी अपने जादू के ज़रीए ऐसा ही किया। इसलिए फ़िरौन अड़ गया और मूसा और हारून की बात न मानी। [...]

मेंढक

पानी के बदल जाने के बाद सात दिन गुज़र गए। [...तब] हारून ने मुल्के-मिसर के पानी के ऊपर अपनी लाठी उठाई तो मेंढकों के ग़ोल पानी से निकलकर पूरे मुल्क पर छा गए। लेकिन जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया। वह भी दरिया से मेंढक निकाल लाए।

फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलाकर कहा, “रब से दुआ करो कि वह मुझसे और मेरी क़ौम से मेंढकों को दूर करे। फिर मैं तुम्हारी क़ौम को जाने दूँगा ताकि वह रब को क़ुरबानियाँ पेश करें।” [...] मूसा और हारून फ़िरौन के पास से चले गए, और मूसा ने रब से मिन्नत की कि वह मेंढकों के वह ग़ोल दूर करे जो उसने फ़िरौन के ख़िलाफ़ भेजे थे। रब ने उसकी दुआ सुनी। घरों, सहनों और खेतों में मेंढक मर गए। लेकिन जब फ़िरौन ने देखा कि मसला हल हो गया है तो वह फिर अकड़ गया और उनकी न सुनी। [...]

जुएँ

[तब] हारून ने अपनी लाठी से ज़मीन की गर्द को मारा तो पूरे मुल्क की गर्द जुओं में बदल गई। उनके ग़ोल जानवरों और आदमियों पर छा गए। जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा करने की कोशिश की, लेकिन वह गर्द से जुएँ न बना सके। जुएँ आदमियों और जानवरों पर छा गईं। जादूगरों ने फ़िरौन से कहा, “अल्लाह की क़ुदरत ने यह किया है।” लेकिन फ़िरौन ने उनकी न सुनी। यों रब की बात दुरुस्त निकली।

काटनेवाली मक्खियाँ

फिर रब ने मूसा से कहा, “जब फ़िरौन सुबह-सवेरे दरिया पर जाए तो तू उसके रास्ते में खड़ा हो जाना। उसे कहना कि रब फ़रमाता

है, 'मेरी क़ौम को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर सकें। वरना मैं तेरे और तेरे ओहदेदारों के पास, तेरी क़ौम के पास और तेरे घरों में काटनेवाली मक्खियाँ भेज दूँगा। मिसरियों के घर मक्खियों से भर जाएँगे बल्कि जिस ज़मीन पर वह खड़े हैं वह भी मक्खियों से ढाँकी जाएगी। लेकिन उस वक़्त मैं अपनी क़ौम के साथ जो जुशन में रहती है फ़रक़ सुलूक करूँगा। वहाँ एक भी काटनेवाली मक्खी नहीं होगी। इस तरह तुझे पता लगेगा कि इस मुल्क में मैं ही रब हूँ। मैं अपनी क़ौम और तेरी क़ौम में इम्तियाज़ करूँगा। कल ही मेरी क़ुदरत का इज़हार होगा।'"

रब ने ऐसा ही किया। काटनेवाली मक्खियों के ग़ोल फ़िरौन के महल, उसके ओहदेदारों के घरों और पूरे मिसर में फैल गए। मुल्क का सत्यानास हो गया। [...]

[तब फ़िरौन बोला,] "ठीक है, मैं तुम्हें जाने दूँगा ताकि तुम रेगिस्तान में रब अपने ख़ुदा को क़ुरबानियाँ पेश करो। लेकिन तुम्हें ज़्यादा दूर नहीं जाना है। और मेरे लिए भी दुआ करना।" [...]

फिर मूसा फ़िरौन के पास से चला गया और रब से दुआ की। रब ने मूसा की दुआ सुनी। काटनेवाली मक्खियाँ फ़िरौन, उसके ओहदेदारों और उसकी क़ौम से दूर हो गईं। एक भी मक्खी न रही। लेकिन फ़िरौन फिर अकड़ गया। उसने इसराईलियों को जाने न दिया।

मवेशियों में वबा

फिर रब ने मूसा से कहा, “फ़िरौन के पास जाकर उसे बता कि रब इबरानियों का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मेरी क़ौम को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर सकें।’ अगर आप इनकार करें और उन्हें रोकते रहें तो रब अपनी क़ुदरत का इज़हार करके आपके मवेशियों में भयानक वबा फैला देगा जो आपके घोड़ों, गधों, ऊँटों, गाय-बैलों, भेड़-बकरियों और मेंढों में फैल जाएगी। लेकिन रब इसराईल और मिसर के मवेशियों में इम्तियाज़ करेगा। इसराईलियों का एक भी जानवर नहीं मरेगा। रब ने फ़ैसला कर लिया है कि वह कल ही ऐसा करेगा।”

अगले दिन रब ने ऐसा ही किया। मिसर के तमाम मवेशी मर गए, लेकिन इसराईलियों का एक भी जानवर न मरा। फ़िरौन ने कुछ लोगों को उनके पास भेज दिया तो पता चला कि एक भी जानवर नहीं मरा। ताहम फ़िरौन अड़ा रहा। उसने इसराईलियों को जाने न दिया।

फोड़े-फुंसियाँ

फिर रब ने मूसा और हारून से कहा, “अपनी मुट्ठियाँ किसी भट्टी की राख से भरकर फ़िरौन के पास जाओ। फिर मूसा फ़िरौन के सामने यह राख हवा में उड़ा दे। यह राख बारीक धूल का बादल

बन जाएगी जो पूरे मुल्क पर छा जाएगा। उसके असर से लोगों और जानवरों के जिस्मों पर फोड़े-फुंसियाँ फूट निकलेंगे।”

मूसा और हारून ने ऐसा ही किया। वह किसी भट्टी से राख लेकर फ़िरौन के सामने खड़े हो गए। मूसा ने राख को हवा में उड़ा दिया तो इनसानों और जानवरों के जिस्मों पर फोड़े-फुंसियाँ निकल आए। इस मरतबा जादूगर मूसा के सामने खड़े भी न हो सके क्योंकि उनके जिस्मों पर भी फोड़े निकल आए थे। तमाम मिसरियों का यही हाल था। लेकिन रब ने फ़िरौन को ज़िद्दी बनाए रखा, इसलिए उसने मूसा और हारून की न सुनी। यों वैसा ही हुआ जैसा रब ने मूसा को बताया था।

ओले

रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ आसमान की तरफ़ बढ़ा दे। फिर मिसर के तमाम इनसानों, जानवरों और खेतों के पौधों पर ओले पड़ेंगे।”

मूसा ने अपनी लाठी आसमान की तरफ़ उठाई तो रब ने एक ज़बरदस्त तूफ़ान भेज दिया। ओले पड़े, बिजली गिरी और बादल गरजते रहे। [...] वह सिर्फ़ जुशन के इलाक़े में न पड़े जहाँ इसराईली आबाद थे।

तब फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलाया। उसने कहा, “इस मरतबा मैंने गुनाह किया है। रब हक़ पर है। मुझसे और मेरी क़ौम

से ग़लती हुई है। ओले और अल्लाह की गरजती आवाज़ें हद से ज़्यादा हैं। रब से दुआ करो ताकि ओले रुक जाएँ। अब मैं तुम्हें जाने दूँगा। अब से तुम्हें यहाँ रहना नहीं पड़ेगा।”

मूसा फ़िरौन को छोड़कर शहर से निकला। उसने रब की तरफ़ अपने हाथ उठाए तो गरज, ओले और बारिश का तूफ़ान रुक गया। जब फ़िरौन ने देखा कि तूफ़ान ख़त्म हो गया है तो वह और उसके ओहदेदार दुबारा गुनाह करके अकड़ गए। फ़िरौन अड़ा रहा और इसराईलियों को जाने न दिया। वैसा ही हुआ जैसा रब ने मूसा से कहा था। [...]

टिड्डियाँ

फिर रब ने मूसा से कहा, “मिसर पर अपना हाथ उठा ताकि टिड्डियाँ आकर मिसर की सरज़मीन पर फैल जाएँ। जो कुछ भी खेतों में ओलों से बच गया है उसे वह खा जाएँगी।”

मूसा ने अपनी लाठी मिसर पर उठाई तो रब ने मशरिक़ से आँधी चलाई जो सारा दिन और सारी रात चलती रही और अगली सुबह तक मिसर में टिड्डियाँ पहुँचाईं। बेशुमार टिड्डियाँ पूरे मुल्क पर हमला करके हर जगह बैठ गईं। इससे पहले या बाद में कभी भी टिड्डियों का इतना सख़्त हमला न हुआ था। उन्होंने ज़मीन को यों ढाँक लिया कि वह काली नज़र आने लगी। जो कुछ भी ओलों से बच

गया था चाहे खेतों के पौधे या दरख़्तों के फल थे उन्होंने खा लिया। मिसर में एक भी दरख़्त या पौधा न रहा जिसके पत्ते बच गए हों।
तब फ़िरौन ने मूसा और हारून को जल्दी से बुलवाया। उसने कहा, "मैंने तुम्हारे ख़ुदा का और तुम्हारा गुनाह किया है। अब एक और मरतबा मेरा गुनाह माफ़ करो और रब अपने ख़ुदा से दुआ करो ताकि मौत की यह हालत मुझसे दूर हो जाए।"
मूसा ने महल से निकलकर रब से दुआ की। जवाब में रब ने हवा का रुख़ बदल दिया। उसने मग़रिब से तेज़ आँधी चलाई जिसने टिड्डियों को उड़ाकर बहरे-क़ुलज़ुम में डाल दिया। मिसर में एक भी टिड्डी न रही। लेकिन रब ने होने दिया कि फ़िरौन फिर अड़ गया। उसने इसराईलियों को जाने न दिया।

अंधेरा

[तब] मूसा ने अपना हाथ आसमान की तरफ़ उठाया तो तीन दिन तक मिसर पर गहरा अंधेरा छाया रहा। तीन दिन तक लोग न एक दूसरे को देख सके, न कहीं जा सके। लेकिन जहाँ इसराईली रहते थे वहाँ रौशनी थी।
लेकिन रब की मरज़ी के मुताबिक़ फ़िरौन अड़ गया। उसने उन्हें जाने न दिया। उसने मूसा से कहा, "दफ़ा हो जा। ख़बरदार! फिर कभी अपनी शक्ल न दिखाना, वरना तुझे मौत के हवाले कर दिया जाएगा।"

मूसा ने कहा, “ठीक है, आपकी मरज़ी। मैं फिर कभी आपके सामने नहीं आऊँगा।”

आख़िरी सज़ा का एलान

तब रब ने मूसा से कहा, “अब मैं फ़िरौन और मिसर पर आख़िरी आफ़त लाने को हूँ। इसके बाद वह तुम्हें जाने देगा बल्कि तुम्हें ज़बरदस्ती निकाल देगा। इसराईलियों को बता देना कि हर मर्द अपने पड़ोसी और हर औरत अपनी पड़ोसन से सोने-चाँदी की चीज़ें माँग ले।” (रब ने मिसरियों के दिल इसराईलियों की तरफ़ मायल कर दिए थे। वह फ़िरौन के ओहदेदारों समेत ख़ासकर मूसा की बड़ी इज़्ज़त करते थे)।

मूसा ने कहा, “रब फ़रमाता है, ‘आज आधी रात के वक़्त मैं मिसर में से गुज़रूँगा। तब बादशाह के पहलौठे से लेकर चक्की पीसनेवाली नौकरानी के पहलौठे तक मिसरियों का हर पहलौठा मर जाएगा। चौपायों के पहलौठे भी मर जाएँगे। मिसर की सरज़मीन पर ऐसा रोना-पीटना होगा कि न माज़ी में कभी हुआ, न मुस्तक़बिल में कभी होगा। लेकिन इसराईली और उनके जानवर बचे रहेंगे। कुत्ता भी उन पर नहीं भौंकेगा। इस तरह तुम जान लोगे कि रब इसराईलियों की निसबत मिसरियों से फ़रक़ सुलूक करता है।’” […]

पहलौठों की हलाकत

फिर मूसा ने तमाम इसराईली बुज़ुर्गों को बुलाकर उनसे कहा, "जाओ, अपने ख़ानदानों के लिए भेड़ या बकरी के बच्चे चुनकर उन्हें फ़सह की ईद के लिए ज़बह करो। ज़ूफ़े का गुच्छा लेकर उसे ख़ून से भरे हुए बासन में डुबो देना। फिर उसे लेकर ख़ून को चौखट के ऊपरवाले हिस्से और दाएँ-बाएँ के बाज़ुओं पर लगा देना। सुबह तक कोई अपने घर से न निकले। जब रब मिसरियों को मार डालने के लिए मुल्क में से गुज़रेगा तो वह चौखट के ऊपरवाले हिस्से और दाएँ-बाएँ के बाज़ुओं पर लगा हुआ ख़ून देखकर उन घरों को छोड़ देगा। वह हलाक करनेवाले फ़रिश्ते को इजाज़त नहीं देगा कि वह तुम्हारे घरों में जाकर तुम्हें हलाक करे।" [...]

आधी रात को रब ने बादशाह के पहलौठे से लेकर जेल के क़ैदी के पहलौठे तक मिसरियों के तमाम पहलौठों को जान से मार दिया। चौपायों के पहलौठे भी मर गए। उस रात मिसर के हर घर में कोई न कोई मर गया। फ़िरौन, उसके ओहदेदार और मिसर के तमाम लोग जाग उठे और ज़ोर ज़ोर से रोने और चीख़ने लगे।

इसराईलियों की हिजरत

अभी रात थी कि फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलाकर कहा, "अब तुम और बाक़ी इसराईली मेरी क़ौम में से निकल जाओ। अपनी दरख़ास्त के मुताबिक़ रब की इबादत करो। जिस तरह तुम

चाहते हो अपनी भेड़-बकरियों को भी अपने साथ ले जाओ। और मुझे भी बरकत देना।” बाक़ी मिसरियों ने भी इसराईलियों पर ज़ोर देकर कहा, “जल्दी जल्दी मुल्क से निकल जाओ, वरना हम सब मर जाएँगे।” […]
इसराईली 430 साल तक मिसर में रहे थे। 430 साल के ऐन बाद, उसी दिन रब के यह तमाम ख़ानदान मिसर से निकले।